माननीया राज्यपाल–सह–झारखण्ड राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का St. Xavier's College, Ranchi के 10th Graduation Ceremony के पावन अवसर पर अभिभाषण

राँची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० रमेश कुमार पाण्डेय, राँची विश्वविद्यालय की प्रतिकुलपति डॉ० कामिनी कुमार, संत जेवियर्स कॉलेज शासी निकाय के अध्यक्ष जोसेफ मरियानुस कुजूर, कॉलेज के प्राचार्य डॉ० ई० बारला, उप प्राचार्य डॉ० नबोर लकड़ा, परीक्षा नियंत्रक डा० ए०के० सिन्हा, सभागार में उपस्थित शिक्षाविद्, प्रेस एवं मीडिया के प्रतिनिधिगण और प्यारे विद्यार्थियों!

सर्वप्रथम मैं St. Xavier's College के 10th Graduation Ceremony इस ऐतिहासिक अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें देती हूँ। विशेषकर, उन विद्यार्थियों को, जो आज उपाधि ग्रहण कर रहे हैं। विभिन्न परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों द्वारा उपाधि ग्रहण करने का यह समारोह उनके जीवन का अविस्मरणीय क्षण तो है ही, साथ ही अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणादायक, उत्साहवर्द्धक और नवीन आशाओं का संदेशवाहक भी है।

यह कहने में मुझे कतई संकोच नहीं हो रहा है कि यह महाविद्यालय राज्य एक प्रतिष्ठित महाविद्यालय है। विद्यार्थियों की आकांक्षा रहती है कि वे यहाँ पढ़ने का गौरव हासिल करें। अभिभावक भी बच्चों से ऐसा प्रदर्शन करने के लिए कहते हैं कि इस महाविद्यालय में नामांकन हो सके। विभिन्न सर्वे रिपोर्ट में भी

इस महाविद्यालय को देश के अच्छे महाविद्यालय की श्रेणी में सम्मिलित किया गया है। मेरे लिए हर्ष का विषय है कि मैं Graduation Ceremony जैसे सुनहरे पल की साक्षी हूँ। मैं इस अवसर पर यह अवश्य उल्लेख करना चाहूँगी कि यह महाविद्यालय Excellence कायम रखें। किसी भी Course के संचालन के पूर्व Infrastructure विकसित करें। ये कदापि नहीं हो कि महाविद्यालय में Students की संख्या में वृद्धि होने के कारण quality education प्रभावित हों। किसी भी देश या प्रदेश के विकास के लिए 21वीं शताब्दी में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण शर्त है। बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के समाज के सर्वांगीण विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है।

शिक्षा का उद्देश्य मात्र उपाधियाँ प्राप्त करना ही नहीं है। शास्त्रों में भी कहा गया है कि विद्या विनयशील बनाती है, विनयशीलता से पात्रता आती है, पात्रता से धन की प्राप्ति होती है और धन प्राप्ति से धर्म और सुख मिलता है। मनुष्य सामान्यतः सुख की अभिलाषा से जीवन जीता है। इसीलिए शिक्षा सुख प्राप्ति का महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षण संस्थानों को आज के वैश्वीकरण के युग में बदलते रोजगारों के स्वरूप के अनुसार अपने विद्यार्थियों को शिक्षा देने की सख्त आवश्यकता है। अपने विद्यार्थियों को विभिन्न प्रतिस्पर्धा में सफल बनाने हेतु शिक्षण संस्थानों को जरूरत के मुताबिक विभिन्न विषयों एवं संकाय का परिस्थिति के अनुसार समावेश करना चाहिए। विद्यार्थियों को उत्कृष्टता प्राप्त करने हेतु संतान की भाँति प्रेरित करना चाहिये।

स्नेहिल विद्यार्थियों! आज के वैश्विक परिवेश ने युवाओं को अनेक स्वर्णिम अवसर प्रदान किये हैं किन्तु चुनौतियाँ भी कम नहीं है। हमारे विद्यार्थियों को इन चुनौतियों का समाधान करते हुए जीवन में सफलता के शिखर पर चढ़ना है। खुदी को कर बुलन्द इतना कि मुसीबतों को पड़ जाए झुकना। क्योंकि हौसलें हैं तो फासले हैं, फासलें हैं, तो मुश्किलें हैं, मुश्किलें हैं तो रास्ते हैं। जिन्दगी के चौराहे पर भटकना नहीं, सही दृष्टि के साथ सही राह का चयन करें, समय की कीमत को समझे। जो समय का सम्मान करता है, समय उसको भी मान देता है। आदमी भीड़ में खोता जा रहा है, अकेलापन जीवन का बोझ है। अपनाना–स्वीकारना, दूसरों के करीब जाना, दूसरों को करीब लाना, एक दूसरे के सुख–दुख में हमसफर बनना, हम राही बनना मानव धर्म है। मुझे पूरा विश्वास है कि St. Xavier's College के Teachers ने अपने विद्यार्थियों को इस दिशा में संस्कारित किया होगा, मानव मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धान्तों को अपनाने की सीख प्रदान की होगी। विद्यार्थियों को सफल बनाने में शिक्षकों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आज जहाँ हम वैश्विक स्तर के उच्च शिक्षा केन्द्रों को स्थापित करना चाह रहे हैं। ऐसी स्थिति में हमें वैश्विक स्तर के शिक्षकों की भी आवश्यकता है। अत: मैं शिक्षकों से अपील करना चाहूँगी कि वे अपने समर्पण एवं सेवा से राष्ट्र को सुशोभित करते रहें। विद्यार्थियों को इस प्रकार की शिक्षा देने हेतु अनवरत लगे रहे ताकि हमारे विद्यार्थी अपने कार्यों एवं कौशल से पूरे देश का नाम रौशन करें। हमारे विद्यार्थी एक अच्छा नागरिक एवं समाजसेवी भी बनें तथा राष्ट्र और समाज के विकास में अपनी महत्वपूर्ण

भागीदारी सुनिश्चित करें। आप शिक्षकगण, विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण हेतु सतत् प्रयत्नशील रहें। मेरी दृष्टि में, शिक्षकों के जीवन की वास्तविक निधि एवं पूँजी विद्यार्थियों की सफलता ही है। मैं कुलाधिपति के रूप में आप सभी शिक्षकों की समस्या के निराकरण हेतु सदैव तत्पर रहती हूँ।

मेरे प्यारे विद्यार्थियों! आज का युग प्रतियोगिताओं का है। कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं। सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास एवं श्रम साधना के साथ किया गया कोई प्रयास विफल नहीं होता। यही इस धरा पर हमारा सर्वोतम निवेश है, हमारी महत्वपूर्ण पूंजी है। इसलिए कठिन परिश्रम करें, अपनी मेधा से श्रेष्ठता हासिल करें ताकि अन्य आपका अनुकरण करें। समय का सम्मान करें, जो समय का सम्मान करता है, समय भी उसका सम्मान करता है, सही समय पर सही निर्णय लेने पर हमारी योजना या कामना का सफर सफल होता है। आप सफलता के शिखर पर पहुँचे एवं झारखण्ड को शिक्षा के क्षेत्र में एक अनुकरणीय प्रदेश बनाने में अपना सहयोग दें। व्यक्तिगत उत्थान के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के उत्थान में भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

हमारा देश युवाओं का देश है। युवाओं में स्थित रचनात्मक व्यक्ति और सृजनात्मक ऊर्जा पर समाज भरोसा करता है। युवा देश वर्तमान ही नहीं भविष्य भी है। झारखंड राज्य के आप सभी मेधावी छात्र-छात्राएँ हैं, जिनसे राज्य को अत्यन्त अपेक्षायें हैं। आप जिस महाविद्यालय के विद्यार्थी हैं जो बेहतर अकादमिक उपलब्धियों

के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित करने का साक्षी रहा है। छात्र–छात्राओं की प्रतिभाओं से स्थापित कीर्तिमानों ने राज्य का मान बढ़ाया है, यह हम सबके लिए गर्व एवं गौरव का विषय है। बेहतर से बेहतरीन करने का यह सिलसिला हमेशा बना रहे यह मेरी कामना है। आप सभी शिक्षित युवाओं से मेरी अपील और अपेक्षा भी है कि शिक्षण एवं स्वाध्याय से रिक्त समय में अशिक्षितों, निरक्षरों, एवं वंचितों को सिंचित करें। सार्वजनिक सभाओं, गोष्ठियों एवं lecture series का आयोजन कर राज्य एवं राष्ट्र के चारित्रिक उत्कर्ष में आप अमूल्य योगदान दे सकते हैं। समाज सेवा के विभिन्न कार्यों में हाथ बंटाकर आप जन–कल्याण तो करेंगे ही, साथ ही जनता को भी सही दिशा मिलेगी। आप अच्छे होंगे, तो देश अच्छा कहलायेगा, आप अनुशासित एवं शिष्ट होंगे तो देश अनुशासित कहलायेगा। हमारी उम्मीदों के केन्द्र बिन्दु आप युवा शक्ति हैं।

प्यारे विद्यार्थियों! प्रतिकूलता को अनुकूलता में तब्दील करने के लिए आप सफल व शिक्षित युवा सरकार की आँख बनें, मस्तिष्क बनें, दिशा निर्देशक की भूमिका निभाये, जरूरत है जिम्मेदारी की बोध शाक्ति बढ़ाने की, परिपक्वता को अपनाने की, तार्किकता को समृद्ध करने की, नेतृत्व क्षमता विकसित करने की, बड़ी भूमिका निभाने का साहस बटोरने की, निश्चित रूप से विश्वास और आत्मविश्वास की यह रोशनी ऐसे भव्य आयोजनों से मिल सकेगी। यह रोशनी आपमें है, क्योंकि आप शिक्षित है, जागरूक है, स्वप्नदर्शी हैं। मात्र अक्षर ज्ञान शिक्षा नहीं, डिग्रियाँ हासिल करना

मात्र भी शिक्षा के उद्देश्य को तृप्त नहीं करता, बल्कि हमारे चिन्तन एवं सोच के क्षितिज को विस्तार देना, एक सीमित घेराबंदी से बाहर निकलने की ताकत देना, हमारी चेतना को जागृत करना शिक्षा का परम लक्ष्य है।

वैश्विक फलक पर भारत ने अपनी अलग और विशिष्ट पहचान बनायी है। सभी हमारे देश की ओर सम्मान एवं उम्मीद भरी दृष्टि रखते हैं। विगत वर्षों में हमने योजनाबद्ध तरीके से अनेक सफल एवं सुफलदायी कदम उठाये हैं। हमें अभी मीलों चलना है– हम खुद राह भी और हम राही भी हैं। विकास–पथ के पथिक आप बनें, क्योंकि आप ही देश की ताकत है, देश के नियन्ता हैं, नियामक हैं।

उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को एक बार पुनः मेरी हार्दिक बधाइयाँ। आप अपने जीवन में सफलता के सर्वोच्च शिखर पर अपना परचम लहरायें और सुखद लक्ष्य पथ पर अग्रसरित हों।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!